

आत्म-सम्मान आंदोलन के 100 वर्ष

स्रोत: द हिंदू

वर्ष 2025 में आत्म-सम्मान आंदोलन की शताब्दी पूरी हुई, जिसने तर्कवाद, सामाजिक समानता और जातविाद-वशिधी वचिरधारा को बढावा दिया ।

आत्म-सम्मान आंदोलन

- **परचिय:** इसे वर्ष 1925 में ई. वी. रामासामी (पेरयार) द्वारा तमलिनाडु में आरंभ किया गया था, जिन्होंने बाद में **द्रवडिर कडगम (Dravidar Kazhagam)** की स्थापना की और तमलि साप्ताहिक **कूडी अरसु (गणराज्य)** शुरू किया ।
 - पेरयार ज्योतरिव फूले और बी.आर. अंबेडकर जैसे समाज सुधारकों से प्रभावित थे और उन्होंने वैकोम सत्याग्रह में भी भाग लिया ।
- **उद्देश्य:** इसका उद्देश्य **जाति व्यवस्था का उन्मूलन, ब्राह्मणवादी प्रभुत्व का खंडन और तर्कसंगत सोच व व्यक्तिगत गरमा को बढावा देना** था, जैसा कि इसके पुस्तिकाओं **नामथु कुरक्कोल** और **तरिवतिक कालका लेतैयम** में उल्लिखित है ।
- **मुख्य वशिषताएँ:**
 - **आत्म-सम्मान वविाह की पहल की** – सरल, पुरोहति रहति समारोह जो कानूनी रूप से मान्य थे ।
 - **देवदासी प्रथा, जातविाद भेदभाव और वधिवा पुनर्वविाह पर प्रतबिध** जैसी सामाजिक बुराइयों के खिलाफ संघर्ष किया ।
 - **महलिाओं के नेतृत्व को बढावा दिया**, जसिमें **अन्नाई मीनाम्बल** और **वीरमल** जैसी प्रमुख हस्तियाँ शामिल थीं ।
 - **मीनाम्बल** ने **ई. वी. रामासामी** को 'पेरयार' की उपाधि प्रदान की और **बी. आर. अम्बेडकर** द्वारा उन्हें "मेरी बहन मीना" के रूप में संबोधित किया गया ।

और पढ़ें: **भारत में जातगित आंदोलन**